International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(3): 74-77

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(3): 74-77
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-03-2018
Accepted: 16-04-2018

शिव कुमार केसरवानी
शोध छात्र, इतिहास विभाग,
बुन्देलखण्ड वि0वि0, झाँसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
शिव कुमार केसरवानी
शोध छात्र, इतिहास विभाग,
बुन्देलखण्ड वि0वि0, झाँसी,
उत्तर प्रदेश, भारत

खजुराहो का महत्व : चन्देल शासकों की भूमिका के विशेष सन्दर्भ में

शिव कुमार केसरवानी

प्रस्तावना

भारतवर्ष न केवल आधुनिक काल में अपितु प्राचीन काल से ही पर्यटन की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध क्षेत्र रहा है। प्राचीन काल से ही बहुत से विदेशी समय–समय पर भारत आते रहे हैं। इनके भारत आने का उद्‌देश्य भारत की संस्कृति के समझना यहाँ की सामाजिक व्यवस्था को समझना, इसके अतिरिक्त भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं भारत के तीर्थस्थलों का भ्रमण इत्यादि सम्भवतः रहा होगा। भारत के पर्यटन स्थलों में कुछ पर्यटन स्थल ऐसे भी हैं जो ऐतिहासिकता के साथ–साथ कलात्मक दृष्टिकोंण से महत्वपूर्ण हैं। इन पर्यटक स्थलों में खजुराहो का अनन्य स्थान है।

खजुराहो वर्तमान मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है जो कि झाँसी से दक्षिण–पूर्व लगभग 165 कि0मी0 की दूरी पर, महोबा से दक्षिण 54 कि0मी0 की दूरी पर, छतरपुर से पूर्व में 45 कि0मी0 तथा सतना से पश्चिम में 105 कि0मी0 की दूरी पर स्थित है। खजुराहो भौगोलिक रूप से $24^{0}51'$ उत्तरी अक्षांश व $79^{0}56'$ पूर्वी देशान्तर पर अवस्थित है। खजुराहो एक कस्बाई स्थल है लेकिन फिर भी अपनी कलात्मक विशिष्टता के स्मारकों के कारण भारत में ताजमहल के बाद, दूसरा सबसे ज्यादा देखा व घूमा जाने वाला पर्यटन स्थल है। खजुराहो का प्राचीन नाम 'खर्जुरवाहक' था। यह नाम संभवतः इसलिए दिया गया, क्योंकि इस क्षेत्र में खजूर के वृक्षों का बाहुल्य था। खर्जुरवाहक आगे चलकर खजुराहो में परिवर्तित हो गया। यह क्षेत्र लगभग दस मील की लम्बाई चौंड़ाई में अपने चरमोत्कर्ष काल में विस्तृत था। स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार यहाँ मंदिर के आगे दो स्वर्ण–खजूर के पेड़ थे, लेकिन वर्तमान दौर में खजुराहो की खोज के दौरान खजूर के पेड़ों का कोई साक्ष्य नहीं मिला।सल्तनत काल में चौदहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में ही मोरक्को देश का यात्री इब्नबतूता भारत की यात्रा पर आया था। इब्नबतूता ने 1335 से 1342 ईस्वी तक भारत वर्ष के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया। इसी क्रम में उसने 'खजुराहो' की भी यात्रा की और इसे ''खजूरा'' नाम से अपने यात्रा वृतान्त में संबोधित किया है। इब्नबतूता ने अपने वृतान्त में तत्कालीन 'खजूरा' नगर को एक विस्तृत झील के किनारे स्थित बताया है, जिसके चारों ओर उत्कृष्ट कला का प्रदर्शन करते मंदिर विद्यमान थे।

खजुराहो की वर्तमान भौगोलिक अवस्थिति अपने समय के प्रसिद्ध खजुराहो–सागर अथवा निनौरा ताल या झील के दक्षिण पूर्व दिशा में स्थित एक गाँव है, जो अपने स्वर्णिम इतिहास के भग्नावशेषों के माध्यम से आज भी खजुराहो के कलात्मक विकास की गौरवगाथा का गान कर रहा है। खजुराहो, अपने नामकरण व क्षेत्रिय विस्तार की प्रक्रिया में प्राचीन काल के वत्स महाजनपद, मध्यकाल में जेजाभुक्ति या जेजाकभुक्ति तथा वर्तमान परिदृश्य में बुन्देलखण्ड क्षेत्र का हिस्सा है। कला तथा संस्कृति के क्षेत्र में यह प्रदेश ईसा पूर्व शताब्दी से ही समृद्धशाली परम्परा का निर्वहन करता आया है। बुन्देलखण्ड की इसी कला भूमि पर द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व में शुंगकालीन भरहुत का स्तूप का निर्माण हुआ और इसी परम्परा का निर्वहन गुप्तकाल में निर्मित भूमरा, खोह और देवगढ़ का दशावतार मंदिर के निर्माण तक अनवरत चलता रहा। उत्तर भारत में मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से इन मंदिरों का महत्वपूर्ण स्थान है।

कला स्थापत्य की इस समृद्धिशाली परम्परा के वाहक इस प्रदेश को वैश्विक पहचान दिलाने में चन्देल शासकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 9वीं से बारहवीं शताब्दी के मध्य बुन्देलखण्ड में कला एवं साहित्य के रस को समझने व उसका सम्मान एवं संरक्षण प्रदान करने वाले शक्तिशाली चन्देल राजवंश का उदय हुआ, जिन्होंने अपनी प्रथम राजधानी 'खजुराहो' को विश्व के श्रेष्ठ कलात्मक स्थापत्य से सजाया। चन्देल नरेशों ने अपने राज्य में चारों तरफ विशेषतः महोबा, कालिंजर और अजयगढ़ केन्द्रों को कला स्थापत्य के विभिन्न स्वरूपों जैसे सरोवरों, दुर्गों, राजप्रासादों तथा मंदिरों से सुसज्जित कर कला स्थापत्य के क्षेत्र में इन्हे नयी ऊँचाई प्रदान की, किन्तु चन्देल शासकों की कलाप्रियता एवं पारखी नजरों का गान करने वाली भव्यता के दर्शन इनकी पूर्ववर्ती राजधानी खजुराहों

में ही होते हैं। खजुराहो में निर्मित मंदिरों और तालाबों की भव्यता के आगे उक्त तीनों कला केन्द्र कहीं नहीं ठहरते, खजुराहों को चन्देल शासकों ने अनेक उत्तुंग शिखरों से युक्त हिमालय जैसी श्रृंखला से शोभायमान मंदिरों तथा झीलनुमा सरोवरों से अलंकृत किया था। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार यहाँ प्रारम्भ में 85 मंदिर थे, परन्तु अब सम्प्रति रूप से वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मात्र 25 मंदिर ही चन्देल शासकों की यशगाथा गा रहे हैं। चन्देल शासकों ने खजुराहो में अनेक उत्कृष्ट मंदिरों का निर्माण करवाया। खजुराहो में निर्मित ये मंदिर नागर मंदिर स्थापत्य शैली के चरमोत्कर्ष को अभिव्यक्त करते हैं। खजुराहो के मंदिर चन्देल शासकों की धार्मिक अभिरूचि के साथ–साथ उनके मौलिक कलात्मक चिंतन के सुंदर निदर्शन हैं। स्थापत्य एवं मूर्तिकला कला की दृष्टि से इन मंदिरों की गणना भारतवर्ष के उत्कृष्ट स्मारकों में होती है।

खजुराहो में मंदिर एवं कला स्थापत्य निर्माण की जो परम्परा नवीं शताब्दी में शुरू हुयी उसका उत्तरोत्तर विकास यहाँ के चन्देल शासकों द्वारा होता रहा और यह परम्परा दसवीं से बारहवीं शताब्दी तक अपने चरमोत्कर्ष पर रही। खजुराहो से प्राप्त 1117 ई0 के जयवर्मन के अभिलेख से यह पुष्ट भी होता है कि परवर्ती चन्देल नरेशों ने भी खजुराहो की महत्ता कम नहीं होने दी। इब्नबतूता ने भी इस तथ्य का उल्लेख किया है कि 1335 ई0 तक खजुराहो मंदिरों की महिमा आलोकित होती रही। इससे यह स्पष्ट है कि खजुराहो का राजनीतिक महत्व कालान्तर में भले ही कम हुआ हो, किन्तु इसका धार्मिक महत्व अनन्य रूप से बना रहा।

खजुराहो के कुछ प्रारम्भिक मंदिर ग्रेनाइट से निर्मित हैं, शेष प्रारम्भिक तथा परवर्ती मंदिर स्थानीय पन्ना की खानों से लाये गये बलुआ पत्थरों से निर्मित हुए हैं। खजुराहो मंदिर समूह में शैव, वैष्णव, शाक्त, सौर और जैन मंदिर विद्यमान हैं। यद्यपि कुछ विद्वान बौद्ध मंदिरों की बात भी करते हैं, किन्तु अभी तक यहाँ बौद्ध मंदिरों का कोई स्थापित साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है। लम्बे निर्माण काल व बदलते शासकों की धार्मिक रूचियों के फलस्वरूप यहाँ निर्मित मंदिर भले ही विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करते हैं, किन्तु वास्तु एवं शिल्प योजना में सभी में समानता है, जो खजुराहो एवं चन्देल शासकों की अपनी विशिष्टता है। यद्यपि निर्माण काल के अन्तर और कला विकास की दृष्टि से अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर खजुराहो मंदिर समूह को प्रारम्भिक व परवर्ती दो वर्गों में बाँटा गया है। चौंसठ योगिनी, लालगुंवा–महादेव, ब्रह्मा, मातंगेश्वर एवं बराह मंदिर को छोड़कर शेष मंदिर परवर्ती काल के हैं।

चौंसठ योगिनी मंदिर शिव सागर झील के दक्षिण–पश्चिम केन्द्र में स्थित है एवं शाक्त सम्प्रदाय से सम्बन्धित है। ग्रेनाइट चट्टानों से निर्मित यह खजुराहो में ज्ञात सबसे प्राचीन चन्देल मंदिर है। मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से यह ऊँची जगती पर स्थित एक चतुष्कोणीय संरचना है, जिसमें अनेक देव मूर्तियाँ हैं। खजुराहो के मंदिरों की प्रारम्भिक विशेषतायें, जैसे ऊँची जगती व दो भागों में विभक्त दीवाल इसकी प्रमुख विशेषता है। स्थापत्य शिल्प तथा मूर्तियों पर अंकित लेखों के आधार पर इसे नवीं शताब्दी के अन्त में निर्मित माना जा सकता है। नवीं एवं दसवीं शताब्दी के मध्य निर्मित अन्य परवर्ती मंदिरों में ब्रह्मा और लाल गुवां का मंदिर जो क्रमशः वैष्णव व शैव मंदिर है तथा मातंगेश्वर मंदिर जो कि इस वर्ग का सबसे बड़ा व सबसे सादा मंदिर है, का प्रमुख स्थान है। इस समूह के सभी मंदिर थोड़े बहुत अन्तरों के साथ उत्तरोत्तर विकसित स्वरूप दर्शाते हैं। यद्यपि इन मंदिरों से इनकी स्थापत्य कला का विकास एवं यहाँ रखी मूर्तियों से निर्माण काल की जानकारी तो मिल जाती है, किन्तु किसी शासक का नाम निश्चित रूप में नहीं मिलता, परन्तु यह सिद्ध तथ्य है कि इनका निर्माण चन्देलों द्वारा ही हुआ है।

वास्तव में खजुराहो की प्रसिद्धि का पर्याय बने मंदिर स्थापत्य का विकसित स्वरूप यहाँ परवर्ती काल के मंदिरों में से शुरू होता है, जिसका प्रारम्भ लक्ष्मण मंदिर से होता है। पंचायतन शैली में निर्मित यह एक वैष्णव मंदिर है। बलुआ पत्थर से निर्मित लक्ष्मण मंदिर परवर्ती समूह के मंदिरों में प्राचीनतम है। खजुराहो के अन्य मंदिरों से अलग यही एक ऐसा मंदिर है, जिसमें दो मेहराब वाले मकरतोरण तथा पंचरथ गर्भगृह है। इसके कुछ स्तम्भों पर फूल पत्ती का उत्कृष्ट अलंकरण है और इसकी मूर्तियाँ अत्यन्त भावपूर्ण मुद्रा वाली हैं। विक्रम संवत् 1011 (953–54 ई0) तिथि से युक्त प्राप्त शिलालेख से यह पता चलता है कि इसका निर्माण लगभग 950 ई0 में चन्देल राजा यशोबर्मन द्वारा कराया गया था।

शिल्प, स्थापत्य व प्राप्त अभिलेखों से यह स्पष्ट है कि पार्श्वनाथ मंदिर लक्ष्मण मंदिर के बाद बना है। इसका निर्माण चन्देल शासक यशोवर्मन के पुत्र तथा उत्तराधिकारी राजा धंग ने सम्भवतः 950–70 ई0 में करवाया था। इस तथ्य की जानकारी यहाँ से प्राप्त अभिलेखों से होती है। जैन सम्प्रदाय का मंदिर होने के बावजूद पार्श्वनाथ मंदिर अधिकांश वैष्णव आकृतियों से युक्त है। मंदिर की दीवारों पर कृष्ण लीला का भी चित्रण है। वास्तु कला के दृष्टिकोण से यह लक्ष्मण मंदिर से अधिक विकसित व दर्शनीय है।

खजुराहो एवं चन्देल कला स्थापत्य का सार एवं उत्कृष्टतम् स्वरूप कन्दरिया महादेव मंदिर है। चन्देल मंदिरों की समस्त विशेषताओं से युक्त स्थापत्य कला का यह भव्यतम् स्मारक भारत की सर्वश्रेष्ठ स्थापत्य कृतियों में विशिष्ट स्थान रखता है। उत्तर भारतीय मंदिर निर्माण की 'नागर' शैली के सर्वश्रेष्ठ एवं सम्पूर्ण स्वरूप के दर्शन 'कन्दरिया महादेव' में होते हैं। इसमें चंदेल मंदिर स्थापत्य के पूर्ण विकसित अंगों– अर्धमण्डप, मण्डप, महामण्डप, अन्तराल, गर्भगृह, प्रदक्षिणा पथ और उत्तुंग शिखर का समन्वित व एकीकृत स्वरूप देखने को मिलता है। खजुराहो के विशालतम् मंदिरों में कन्दरिया महादेव ही एक मात्र मंदिर है, जिसकी जगती के दोनों पार्श्वों में पीछे की ओर भद्र है। इस मंदिर का अधिष्ठान भी अन्य मंदिरों से ऊँचा है। मंदिर अधिष्ठान की दीवारों पर उत्कीर्ण गज, अश्व, योद्धा, संगीतज्ञ और नर्तकियों एवं अप्सराओं के जीवंत दृश्य दर्शनीय हैं। द्वार शाखाओं के मूल में एक ओर मकरवाहिनी गंगा और दूसरी ओर कूर्म वाहिनी यमुना स्थापित है। गर्भगृह वर्गाकार है, जिसमें संगमरमर का शिवलिंग प्रतिष्ठित है। 85 छोटे–छोटे श्रृंग शिखरों से युक्त शिखर इस मंदिर की भव्यता का सुन्दर स्वरूप दर्शाता है। बारीकी से तराशी गयी मूर्तियाँ शिल्पकार एवं शासकों की आन्तरिक मनोवृत्तियों का दर्शन कराती है, जो अद्भुत है। चूँकि 1002 ई0 में निर्मित हुए विश्वनाथ मंदिर का विकसित स्वरूप कन्दरिया महादेव है अतएव कन्दरिया महादेव का निर्माण इसके कुछ समय बाद हुआ होगा। अतः इसके निर्माण की तिथि विद्याधर चन्देल के शासन के उत्तरार्द्ध या 1025–50 ई0 में निर्मित हुआ मान सकते हैं। इस प्रस्तावित निर्माण तिथि की पुष्टि मंदिर मण्डप के भित्ति स्तम्भ में खुदे संक्षिप्त अभिलेख से होती है।

खजुराहो के शेष मंदिर जो परवर्ती काल के हैं बिना प्रदक्षिणा पथ के और छोटे आकार के हैं। इन मंदिरों में जगदम्बी, चित्रगुप्त, वामन, आदिनाथ, दूलादेव आदि उल्लेखनीय है। इनकी स्थापत्य कला में भी खजुराहो की वही विशिष्टता है। चन्देल वंश के इतिहास के स्रोत के रूप में चन्देल शासकों द्वारा निर्मित मंदिर तथा उसमें उत्कीर्ण तोरण चन्देल शासकों की महत्ता एवं मंदिर स्थापत्य के प्रति प्रेम के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हैं। अतः चंदेल मंदिर स्थापत्य का परिचय अवश्यम्भावी है।

खजुराहो न केवल विशाल मंदिर स्थापत्य, बल्कि अपनी सुंदर एवं सजीव मूर्ति–कला के लिए भी विश्व में प्रसिद्ध है। मूर्ति कला की दृष्टि से खजुराहो अति समृद्धिशाली है। यद्यपि चन्देल शासकों द्वारा निर्मित मूर्तियाँ, उनके द्वारा निर्मित मंदिरों का ही हिस्सा है, स्वतंत्र रूप से कोई मूर्ति–कला का संरक्षण नहीं दिखता है, फिर भी मंदिर के विभिन्न भागों यथा गर्भगृह, अधिष्ठान, गवाक्ष आदि में उत्कीर्ण मूर्तियाँ तक्षण कला के प्रति चन्देल शासकों की मनोवृत्तियों का सुन्दर चित्रण करती हैं। मंदिर के विभिन्न हिस्सों में निर्मित इन मूर्तियों को निर्मित स्थान, विषय एवं धार्मिक उपयोगिता के आधार पर अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मुख्यतः पाँच वर्गों में बाँटा गया है। मंदिर के गर्भगृह में स्थापित दैनिक पूजार्थ में प्रयोग आने

वाली मूर्तियों को प्रथम वर्ग के अन्तर्गत रखा गया है। समभंग खड़ी अवस्था में निर्मित ये मूर्तियाँ पार्श्व से तक्षण कला से अलंकृत हैं। इन मूर्तियों के निर्माण में धार्मिक परम्परा और मूर्ति–कला विज्ञान के नियमों का पूर्णतः पालन शिल्पियों द्वारा हुआ है। गर्भगृह में स्थित होने के कारण इस मर्यादा का पूर्ण पालन हुआ है कि सौन्दर्य की अपेक्षा इनसे शान्ति की झलक एवं भावों के दर्शन हो, जिसमें वे सफल भी रहे।

द्वितीय वर्ग के अन्तर्गत मुख्यतः मंदिर रथिकाओं में उत्कीर्ण मूर्तियों को रखा जा सकता है। निर्माण कला की दृष्टि से ये मूर्तियाँ गर्भगृह के अन्दर निर्मित मूर्तियों के समान ही है। यद्यपि देवताओं के अंकन में पहले से ज्यादा परम्परागतता है। इस वर्ग के अन्तर्गत परिवार, पार्श्व और इन्हे आवरण प्रदान करती देवताओं की मूर्तियाँ प्रमुख हैं। देवताओं की प्रतिमाओं को उनके द्वारा धारित विशेष माला और वक्ष पर उत्कीर्ण लांछन चिन्ह से आसानी से वर्गीकृत किया जा सकता है, अन्य अलंकरण मानव आकृतियों के समान ही है।

तृतीय वर्ग के अन्तर्गत निर्मित प्रतिमाओं से चन्देल शासकों की लौकिक जीवन के प्रति रूचि एवं तत्कालीन मानव समाज की मनोवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इस वर्ग में सुर–सुन्दरियों की मूर्तियाँ आती हैं, जो खजुराहो के सभी मंदिरों के बाह्य दीवारों एवं कुछ अन्य स्थलों पर भी अलंकृत हैं। इन मूर्तियों का तक्षण इतनी बारीकी से हुआ है कि इनके विभिन्न भाव भंगिमाओं, इनके वस्त्राभूषण का अलंकरण सजीव मालूम पड़ते हैं। कुछ अप्सराओं की नृत्यरत मूर्तियाँ देवताओं की अनुचरियों के रूप में या देवताओं की आराधना करते हुए अत्यन्त सुन्दर भाव–भंगिमा का प्रदर्शन करती हैं। अधिकांश मूर्तियों में मानव जीवन के सामान्य मनोभावों एवं क्रियाकलापों को व्यक्त किया गया है। जैसे शिशु दुलारती माता का अंकन, वीणा बजाती सुन्दरी आदि ऐसे ही चिर परिचित मानवीय क्रिया कलापों का दर्शन इस वर्ग की मूर्तियों में होता है। मनोहारी अप्सराओं का चित्रण मानव जीवन में आत्मिक सौन्दर्य के बोध की ओर संकेत करता है। मानवीय मर्म को कला के जरिए कैसे व्यक्त करना है चन्देल शासकों ने बखूबी समझा और इनका सजीव निर्माण करा समाज से साझा भी किया, जिस कारण आज चन्देल शासकों की गौरवगाथा अमर है।

चतुर्थ वर्ग के अन्तर्गत खजुराहो शासकों के दैनिक जीवन के विभिन्न विषयों की ऐसी मूर्तियाँ हैं, जिनका विषय धर्म से इतर है। इसके अन्तर्गत शासकों के युद्ध करते दृश्यों का अंकन, आखेट का चित्रण तथा अन्य पारिवारिक जीवन के दृश्यों का अंकन तक्षण कला में चन्देल शासकों की रूचि को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त इस वर्ग में कुछ नृत्यरत नर–नारियों एवं मिथुन युगल की मूर्तियों का अंकन चन्देल शासकों की भौतिकता से परे आध्यात्मिक झुकाव के आनन्द को दर्शाता है।

अन्तिम एवं पाँचवे वर्ग में मुख्य रूप से पशु–पक्षियों की मूर्तियों का निर्माण हुआ है। ये सामान्य रूप से मंदिर जंघाओं की आन्तरिक रेखा में उकेरे गये हैं। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य भागों में भी कुछ पशु आकृतियों का अंकन हुआ है। इस वर्ग के अन्तर्गत मुख्य रूप से शार्दूल की मूर्ति का उल्लेख किया जा सकता है, जो सम्भवतः सींगयुक्त सिंह की भाँति दर्शित है। शार्दूल के विभिन्न स्वरूपों नरव्याल, शुकव्याल, गजव्याल आदि का अंकन भी मिलता है। शार्दूल की मूर्तियों का इस तरह निर्माण निश्चित ही विषय के रूप में इसमें व्याप्त लाक्षणिकता एवं लोकप्रियता को दर्शाता है।

यद्यपि खजुराहो कला में पूर्ववर्ती गुप्त–कला का प्रभाव देखा जा सकता है, किन्तु मूर्तियों के निर्माण, उनकी भाव–भंगिमाओं की अभिव्यक्ति, इनकी भव्यता और मनोहारी सजीवता तथा सुन्दरता की तुलना किसी कला से नहीं की जा सकती। खजुराहो–कला की मूर्तियाँ अपने में अप्रतिम तथा सर्वश्रेष्ठ है।

खजुराहो कला स्थापत्य के सर्वोत्तम उदाहरण एवं चन्देल शासकों की चिरंजीवी प्रसिद्धि का कारण मुख्य रूप से उनके मंदिर एवं मूर्तियाँ ही हैं। फलतः विभिन्न मतों के मंदिर अपनी कलात्मक विविधताओं के साथ यहाँ विद्यमान है, परन्तु नागरिक स्थापत्य की दृष्टि से खजुराहो या चन्देल शासकों की भूमि शून्य नहीं है। नागरिक स्थापत्य के अन्तर्गत राज प्रासाद अथवा बैठक तालाब तथा स्तम्भों को शामिल किया जा सकता है। शासन के शान्ति काल में खजुराहो तथा अन्य चन्देल शासित प्रदेशों में अनेक सुन्दर शैलकृत राज प्रासादों का निर्माण कराया गया था, यद्यपि वर्तमान में बहुत कम ऐसे निर्माण बचे, जिनसे उनकी भव्यता एवं निर्माण काल की जानकारी मिले, फिर भी इनसे चन्देल शासकों की रूचि एवं शिल्पकारों की विशेषज्ञता के दर्शन अवश्य हो जाते हैं।

नागरिक स्थापत्य के स्मारकों में चन्देल शासकों द्वारा निर्मित विशाल तालाबों का प्रमुख स्थान है। चन्देल नरेशों ने अनेक तालाबों व झीलों का निर्माण कराया अस्तु, प्रत्येक मंदिर के समीप संयोजित रूप से एक तालाब का निर्माण चन्देल शासकों की खास विशेषता थी। इन तालाबों में बारीकी से तराशे गये पत्थरों का उपयोग इनकी सुन्दरता को बढ़ाता है। इनकी निर्माण शैली से यह प्रतीत होता है कि चन्देल राजाओं के पास अनेक कुशल शिल्पकार थे, जिनका उपयोग उन्होंने कला के हर क्षेत्र में किया। चन्देलों द्वारा निर्मित अधिकांश तड़ाग या तालाब किसी विशिष्ट देवी–देवता के नाम से प्रसिद्ध है। जैसे शिव सागर, राम सागर आदि, किन्तु कुछ अपने निर्माणकर्ता एवं स्थान के नाम से भी प्रसिद्ध है। यद्यपि खजुराहो में बहुत से तालाबों की जानकारी मिलती है, किन्तु वर्तमान में कुछ का ही अस्तित्व विद्यमान है। इस क्रम में– खजूर सागर का नाम प्रमुख है। इसे नैनौरी ताल के स्थानीय नाम से भी जाना जाता है। खजुराहो के समीप स्थित इस ताल की लम्बाई एक मील और चौंड़ाई पौन मील है। इसके अतिरिक्त खजुराहो से लगभग पौन मील दूर पश्चिमी मंदिर समूह के किनारे स्थित 'शिव सागर' तालाब भी प्रमुख है, जो उत्तर से दक्षिण लगभग 1 किमी0 लम्बा है। चित्रगुप्त मंदिर के पश्चिमोत्तर में 200 गज की दूरी पर ही चोप्रा ताल स्थित है। यह एक वर्गाकार जलाशय है, जिसके चारों ओर सोपान श्रृंखला निर्मित है और मध्य में एक छोटा सा मण्डप है। इसके अतिरिक्त चन्देल शासकों ने अपने शासन क्षेत्र के हर भाग में तालाबों का निर्माण कराया, जो कि बुन्देलखण्ड के भौगोलिक स्वरूप की माँग भी रही है। खजुराहो के बाहर महोबा, अजयगढ़, कालिंजर आदि जगहों पर भी चन्देल शासकों द्वारा निर्मित अनेक तालाब अभी भी विद्यमान हैं।

किसी कालखण्ड या शासक के इतिहास को संजोने में स्तम्भों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके अतिरिक्त स्तम्भ शिल्प स्थापत्य का प्राचीन काल से ही एक महत्वपूर्ण अंग रहा है। अतः स्तम्भ निर्माण की मौर्य एवं गुप्तकालीन ऐतिहासिक परम्परा का निर्वहन चन्देलों ने भी किया। चन्देलों द्वारा स्थापत्य कला के इस स्वरूप का प्रयोग अपनी विजयों, अपने धार्मिक प्रेम एवं सीमाओं के निर्धारण हेतु क्रमशः जय स्तम्भ, तीर्थ स्तम्भ तथा सीमा स्तम्भ के रूप में किया। यद्यपि अधिकांश चन्देल स्तम्भों का अब अस्तित्व नहीं बचा है। कुछ एक ही अपने मूल स्थान पर अब है, जिनसे स्तम्भ निर्माण के प्रति चन्देलों की रूचि को समझा जा सकता है।

खजुराहो की कलानिधियों में पूर्वी और पश्चिमी भारतीय कलाओं के समन्वय का सुन्दर निदर्शन मिलता है। अपने भव्य रूप, भावों की गूढ़ता एवं शिल्पियों की मौलिक चेतना खजुराहो को आज भी भारतीय कला के प्रतिनिधि के रूप में विश्व के समक्ष प्रस्तुत करती है। साथ ही यह चन्देल शासकों की धार्मिकता, उत्कट कलाप्रियता एवं अक्षुण्ण कीर्ति का अमिट स्मारक तथा भारतीय कला संपदा का अगाध आगार है।

सन्दर्भ सूची

1. पाण्डेय, अयोध्या प्रसाद : चन्देलकालीन बुन्देलखण्ड का इतिहास
2. देव कृष्ण : टेम्पुल्स आफ खजुराहो
3. अवस्थी, रामाश्रय : खजुराहो की देव प्रतिमायें
4. देसाई, देवांगना : खजुराहो, नई दिल्ली

5. देव कृष्ण : उत्तर भारत के मंदिर
6. वर्मा, डा0 महेन्द्र : खजुराहो में काम दर्शन
7. मिश्रा, फणीकान्त : खजुराहोः विथ लेटेस्ट डिस्कवरी
8. त्रिवेदी, एस0डी0 : बुन्देलखण्ड का पुरातत्व, झाँसी, 1984